om-11 INITIAL_Page 1 and 2 12-08-2014 11:59 Page 8

कथा सरिता

रात की बात

एक बार एक संत अपनी जमात के साथ यात्रा कर रहा था। उसे सायंकाल एक जंगल में रुकना पड़ा। रात्रिकालीन प्रवास की सारी व्यवस्थाएं जुटाई गईं। एक वृद्ध आदमी उधर से गुजरा। वह थका हारा था। उसने संत से प्रार्थना की- मैं बहुत थक गया हूँ। संत ने उसे ठहरने की अनुमति दे दी। प्रार्थना का समय हुआ। सब लोग प्रार्थना करने लगे। वह वृद्ध प्रार्थना नहीं करता था। उसने प्रार्थन करने वालों को सुनाते हुए कहा - ईश्वर कहां है? किसने देखा है ईश्वर को? सब धोखा है, पाखण्ड है। संत यह सुनकर स्तब्ध रह गया। उसने कहा - भले आदमी! ऐसी बातें बंद करो। ईश्वर को गालियां मत दो। वृद्ध आदमी ने संत के कथन को अनसुना कर दिया। संत तिममिला उठा। उसने अपने सेवकों को आदेश दिया - इसको यहां से बाहर निकाल दो।

वृद्ध आदमी ने अनुनय के स्वर में कहा - इस भयंकर अंधियारी रात में मैं कहां जाऊंगा? संत ने कहा - ऐसे नास्तिक आदमी को मैं यहां नहीं रहने दूंगा। चले जाओ यहां से। संत के सेवकों ने उसे धक्का देकर बाहर निकाल दिया।

कहा जाता है - उसी समय ईश्वर प्रकट हुए, उन्होंने कहा यह क्या हो रहा है? झगड़ा क्या है?

संत ने कहा, ऐसा नास्तिक आदमी आ गया, जो ईश्वर को गालियां दे रहा था। बहुत ही नास्तिक आदमी था। वह ईश्वर को कुछ समझता ही नहीं है। सत्तर-अस्सी वर्ष का बूढ़ा होकर भी वह ईश्वर का अपमान कर रहा था। ईश्वर के इस अपमान को कैसे सहन करता? मैंने उसे धक्का देकर बाहर निकलवा दिया।

ईश्वर ने कहा - तुमने यह अच्छा नहीं किया। वह बेचारा रात को कहां जाएगा? दु:ख पाएगा, भटक जाएगा। इतने घोर अंधकार में, खुले आकाश में वह कहां रहेगा? तुम्हारे पास तम्बू है, सब कुछ सुविधाएं हैं। तुमने उसे क्यों निकाला? संत ने कहा, मैं ऐसे आदमी को सहन नहीं कर सकता। ईश्वर बोले, जिस आदमी को मैंने सत्तर वर्ष तक सहा है, क्या तुम उसे एक रात भी सहन नहीं कर सकते? ईश्वर की बात सुनकर संत अपनी करनी पर पछताया और उसने भविष्य में किसी के साथ दुर्व्यवहार नहीं करने की कसम खाई।

गाली पास ही रह गई

एक लड़का बड़ा दुष्ट था। वह चाहे जिसे गाली देकर भाग खड़ा होता। एक दिन एक साधु बाबा एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठे थे। लड़का आया और गाली देकर भागा। उसने सोचा कि गाली देने से साधु चिढ़ेगा और मारने दौड़ेगा, तब बड़ा मज़ा आएगा, लेकिन साधु चुपचाप बैठे रहे। उन्होंने उसकी ओर देखा तक नहीं। लड़का और निकट आ गया और खूब ज़ोर-ज़ोर से गाली बकने लगा। साधु अपने भजन में लगे थे। उन्होंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

तभी एक दूसरे लड़के ने आकर कहा- 'बाबा जी! यह आपको गालियां देता है।' बाबा जी ने कहा- 'हाँ भैया, देता तो है, पर मैं लेता कहां हूँ। जब मैं लेता नहीं तो सब वापस लौटकर इसी के पास रह जाती हैं।' लड़का बोला- लेकिन यह बहुत खराब गालियां देता है। साधु- यह तो और खराब बात है। पर मुझे तो वे कहीं नहीं चिपकीं, सब के सब इसी के मुख में भरी हैं। इससे इसका ही मुख गंदा हो रहा है।

गाली देने वाला लड़का सब सुन रहा था। उसने सोचा, साधु ठीक ही तो कहा रहा है। मैं दूसरों को गाली देता हूँ तो वे ले लेते हैं। इसी से वे तिलमिलाते हैं, मारने दौड़ते हैं और दु:खी होते हैं। यह गाली नहीं लेता तो सब मेरे पास ही तो रह गई। लड़का मन ही मन बहुत शर्मिंदा हुआ और सोचने लगा कि छि: मेरे पास कितनी गंदी गालियां हैं। वह साधु के पास गया, क्षमा मांगी और बोला- बाबा जी! मेरी यह गंदी आदत कैसे छूटे और मुख कैसे शुद्ध हो? साधु ने समझाया- 'पश्चाताप करने तथा फिर ऐसा न करने की प्रतिज्ञा करने से बुरी आदत दूर हो जाएगी। मधुर वचन बोलने और भगवान का नाम लेने से मुख शुद्ध हो जाएगा।'

राजा भोज के प्रश्न का उत्तर

राजा भोज ने दरबारियों से पूछा कि नष्ट होने वाले की क्या गति होती है? इसका उत्तर कोई दरबारी नहीं दे सका। कवि कालिदास से पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि वह कल इसका उत्तर देंगे। राजा भोज रोज़ सुबह टहलने जाया करते थे। अगले दिन टहलकर लौटते समय उन्होंने देखा कि रास्ते में एक सन्यासी खड़ा है, जिसके भिक्षा पात्र में मांस के टुकड़े रखे हुए हैं। उन्हें यह देखकर एक बार भी खुद पर भरोसा नहीं हुआ कि क्या यह सच है! उन्होंने उसे पुन: ध्यान से देखा, तो बड़ी मुश्किल से यकीन हुआ कि जो वह देख रहे हैं, सही है। भोज ने आश्चर्य से पूछा, अरे भिक्षु। तुम सन्यासी होकर मांस का सेवन करते हो? सन्यासी ने उत्तर दिया, मांस खाने का आनंद बिना शराब के कैसे हो सकता है। राजा यह सुनकर चिंता में पड़ गए कि वह क्या सुन रहे हैं। क्या शराब भी तुम्हें अच्छी लगती है? सन्यासी बोला, केवल शराब ही मुझे प्रिय नहीं है, वैश्या भी। उन्होंने पूछा, अरे, वैश्याएं तो धन की इच्छुक होती हैं। तुम साधु हो, तुम्हारे पास तो धन नहीं है। सन्यासी बोला, मैं जुआ खेलकर और चोरी करके पैसे जुटा लेता हूँ। राजा ने पूछा, अरे भिक्षु, तुमको चोरी और जुआ भी प्रिय है? सन्यासी ने कहा, जो व्यक्ति नष्ट होना चाहता हो, उसकी और क्या गति हो सकती है। राजा भोज समझ गए कि यह कालिदास है और कल के प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं। तभी कालिदास ने अपने असली रूप में आकर कहा, भौतिकवाद का मार्ग ही नष्ट होने का मार्ग है। जो भौतिक सुख-सुविधाओं के मायाजाल में उलझकर रह जाता है, वह अपना जीवन ही बर्बाद कर बैठता है।

संतोष का फल

एक बार एक देश में अकाल पड़ा। लोग भूखों मरने लगे। नगर में एक धनी दयालु पुरुष था। उन्होंने सब छोटे बच्चों को प्रतिदिन एक रोटी देने की घोषणा कर दी। दूसरे दिन सवेरे बगीचे में सब बच्चे इकट्ठे हुए। उन्हें रोटियां बंटने लगीं। रोटियां छोटी-बड़ी थीं। सब बच्चे एक दूसरे को धक्का देकर बड़ी रोटी पाने का प्रयत्न कर रहे थे। केवल एक छोटी लड़की एक ओर चुपचाप खड़ी थी। वह सबसे अंत में आगे बढ़ी। टोकरे में सबसे छोटी अंतिम रोटी बची थी। उसने उसे प्रसन्नता से ले लिया और घर चली गई। दूसरे दिन फिर रोटियां बांटी गईं। उस लड़की को आज भी सबसे छोटी रोटी मिली। लड़की ने जब घर लौटकर रोटी तोड़ी तो रोटी में से सोने की एक मुहर निकली। उसकी माता ने कहा- 'मुहर उस धनी को दे आओ।' लड़की दौड़ी-दौड़ी धनी के घर गई। धनी ने उसे देखकर पूछा- 'तुम क्यों आई हो?' लड़की ने कहा- 'मेरी रोटी में यह मुहर निकली है। आटे में गिर गई होगी। देने आई हूँ। आप अपनी मुहर ले लें।' धनी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे अपनी धर्मपुत्री बना लिया और उसकी माता के लिए मासिक वेतन निश्चित कर दिया। बड़ी होने पर लड़की उस धनी की उत्तराधिकारिणी बनी।

अपना-अपना स्वर्ग

एक देवदूत भ्रमण करता हुआ स्वर्ग की ओर जा रहा था। उसकी दृष्टि पृथ्वी पर कीचड़ में फंसे सूअर पर पड़ी। देवदूत को सूअर पर दया आ गई। देवदूत ने पूछा - 'मैं तुमको यहां से निकाल दूं?' सूअर ने कहा - 'ठहरो! मैं इस ओर से ज़रा एक डुबकी और लगा लूं।' कुछ समय बाद पूछा - 'क्या अब मैं तुमको इस कीचड़ से निकाल दूं।' सूअर बोला - 'अभी ठहरो। कीचड़ के उस ओर से एक डुबकी और लगा लूं।' सूअर ने कीचड़ में डुबकी लगाई फिर बोला - 'आप कहां से आए हैं? कहां जा रहे हैं?'

'मैं स्वर्ग से आया हूं, वापस वहीं जा रहा हूं।' 'क्या आप मुझे भी स्वर्ग ले जा सकते हैं?' देवदूत बोला - 'क्यों नहीं, चलो मैं तुमको भी ले चलता हूं।'

सूअर ने फिर प्रश्न पूछा - 'आप यह बताइए कि क्या स्वर्ग में भी ऐसा कीचड़ है?' देवदूत बोला - 'वहां कीचड़ का क्या काम? वहां तो फूलों और फलों के सुंदर-सुंदर बाग हैं। मखमली दूब है।' यह सुनकर सूअर बोला - 'यदि वहां कीचड़ नहीं है तो फिर ऐसा आनंद वहां कहां मिलेगा? मुझे नहीं आना है तुम्हारे साथ। मैं कहता हूं तुम भी एक डुबकी लगा लो, आनंद आ जाएगा।' देवदूत सूअर की अज्ञानता पर हंसकर आगे बढ़ गए।

काठमाण्डू-नेपाल। नेपाल के सम्माननीय प्रधानमंत्री सुशील कोइराला को राखी बांधते हुए ब्र.कु. राज।

दिल्ली-हरिनगर। सिक्योरिटी सर्विसेज़ विंग के कार्यक्रम में हरिनगर तथा कनेक्टेड सेंटर्स की ओर से रमन जी,कमाण्डेंट सी.आई.एस.एफ. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शुक्ला दीदी।

बहादुरगढ़। 'वाह ज़िन्दगी वाह' कार्यक्रम के अंतर्गत मंचासीन ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. विनीता, गजराज सिंह, सुनील गोएल, विपिन बजाज, ब्र.कु. अंजली तथा अन्य।

कोल्हापुर-हुपरी। ब्र.कु. सुनंदा को ''समाजभूषण'' पुरस्कार से सम्मानित करते हुए प्रिन्सीपल डॉ. टी.एस. पाटील, डॉ. अनिल भडके, साहित्यकार राम कुरके तथा प्रतिष्ठान अध्यक्ष शंकरराव पाटील।

मंदसौर। स्नेह मिलन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सांसद सुधीर गुप्ता, ब्र.कु. समिता, ब्र.कु. हेमलता ब्र.कु. संतोष तथा अन्य।

मऊ-उ.प्र.। डॉ. वी.वी.राय को ईश्वरीय संदेश व ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. विमला। साथ हैं ब्र.कु. आरती।